विश्व शांति दिवस पर शांतिदूत का संदेश
सभी देश एक दूसरे के साथ मैत्री भाव रखें : आचार्यश्री महाश्रमण
केलवा में चातुर्मास, परोक्ष रुप से दी चीन को सीख, कहा– किसी की भूमि हडपने का अन्यायपूर्ण व्यवहार नहीं करना चाहिए, एक नवम्बर को होगी साध्वी और समण दीक्षा, फिर दोहराया जाएगा केलवा में इतिहास, महिला शक्ति का अधिवेशन आज से, पूर्वजन्म अनुभूति प्रेक्षाध्यान शिविर का आगाज

केलवाः 21 सितम्बर

शांतिदूत आचार्यश्री महाश्रमण ने विश्व शांति दिवस पर शांति स्थापना का संदेश देते हुए कहा कि विश्व में शांति बहुत महत्वपूर्ण है। जब जब युद्ध का प्रसंग आता है अशांति का माहौल बन जाता है। युद्ध की स्थितियां न बने। इस ओर ध्यान देने की आवश्यकता है। सभी देश एक दूसरे के साथ मैत्री पूर्ण व्यवहार रखें। किसी देश को दूसरे देश की भूमि हडपने जैसा अन्यायपूर्ण व्यवहार नहीं करना चाहिए।

आचार्यश्री ने उक्त उद्गार यहां तेरापंथ समवसरण में चल रहे चातुर्मास में बुधवार को दैनिक प्रवचन के दौरान व्यक्त किए। उन्होंने कहा कि विश्व मैत्री की बहुत बडी बात है। प्रत्येक व्यक्ति के मन में मैत्री का भाव जाग जाए तो विश्व शांति की बात सार्थक हो सकती है। सभी देशों में परस्पर वैमनस्य न हो, इसके प्रति जागरुकता रहनी चाहिए। उन्होंने चीन को परोक्ष रुप से सीख देते हुए कहा कि किसी के द्वारा दूसरों पर अधिकार जमाने, भूमि हडपने जैसा अनुचित प्रयास नहीं करना चाहिए। दूसरों को नजरअंदाज कर, छोटा दिखाकर स्वयं को बडा दिखाने का प्रयास शांति में बाधक बनता है। हमारी साधना ऐसी हो कि हमारे राग–द्वेष के भाव कमजोर पड जाए, तटस्थ की स्थिति आ जाए और हर स्थिति में सम रह सके। आचार्यश्री ने आचार्य महाप्रज्ञ के सूत्र रहो भीतर जीयों बाहर का उल्लेख करते हुए कहा कि हम दुनियां में रहते हुए भी भीतर रहने का अभ्यास करे। भीतर रहने की साधना पुष्ट होगी तो कितनी अच्छी धर्म की आराधना हो जाएगी। अपने आप में रहना, स्थितप्रज्ञता, वीरागता, स्थितात्मा की साधना है।

शत्रुओं के प्रति हो मैत्री भाव

आचार्यश्री महाश्रमण ने कहा कि हमारे साथ शत्रुता का व्यवहार करने वाले के भी प्रति मैत्री का भाव रखना चाहिए। जो शत्रुओं को भी मित्र मानता है वह अहिंसक हो सकता है। दयानंद सरस्वती इसके उदाहरण है।

उन्होंने अपनी निंदा और आलोचना करने वाले को भी उपहार भेजा था। हम अपने मन को टटोले कि हमारी ऐसी स्थिति है की नहीं। जो हमें कष्ट देता है और विरोध करता है, उसके प्रति मैत्रीपूर्ण व्यवहार होना चाहिए। आचार्य तुलसी कहते थे कि **जो हमारा हो विरोध उसे हम समझे विनोद** विरोध को विनोद के रुप में लेने पर मित्रता बनी रह सकती है। आचार्यश्री महाप्रज्ञ को जो सम्मान मिला, आदर मिला उसके पीछे उनका विशुद्ध प्रेम था। वे हर जाति धर्म के व्यक्ति को सम्मान के साथ देखते थे। आचार्यश्री ने कहा कि वास्तव में हमारा कोई शत्रु नहीं होता, मित्र नहीं होता। आत्मा की अशुभ प्रवृति शत्रु है और शुभ प्रवृति मित्र। किसी के प्रति द्वेष नहीं रखना और दूसरों का हित चिंतन करना ही मैत्री है। मंत्री मुनि सुमेरमल ने श्रावक समाज को दृष्टि सम्पन्न बनने की प्रेरणा दी। इस अवसर पर मुनि प्रसन्नकुमार ने भी विचार व्यक्त करते हुए अब तक हुई तपस्याओं की जानकारी दी। संयोजन मुनि मोहजीत कुमार ने किया।

दो समणियों की साध्वी दीक्षा घोषित

आचार्यश्री ने केलवा को इस चातुर्मास में दूसरा दीक्षा समारोह प्रदान किया है। इसके साथ ही तेरापंथ धर्मसंघ की उद्‌गम स्थली केलवा की धरा पर एक ओर इतिहास की इबारत लिखी जाएगी। उन्होंने एक नवम्बर को समणी परमप्रज्ञा एवं समणी प्रेक्षा प्रज्ञा को साध्वी दीक्षा प्रदान करने की घोषणा की। उन्होंने पूर्व में इसी दिन गणपतलाल बोहरा को सावधिक समण दीक्षा देने की स्वीकृति प्रदान की थी।

राकेश चपलोत ने किया 27 दिन का उपवास

आचार्य महाश्रमण अमृत महोत्सव एवं केलवा चातुर्मास को यादगार बनाने के लिए राकेश चपलोत ने 27 दिन का उपवास किया। इस अवसर पर आचार्यश्री ने कहा कि लंबी साधना करना कठिन है, परन्तु भीतर से कुछ ऐसा संवेग जाग जाता है कि कठिन तप भी कर लेता है। चपलोत की तपस्या पर अनुमोदना करते हुए अणुव्रत समिति के अध्यक्ष मुकेश कोठारी, श्रीमती उषा चपलोत, मीना चपलोत और युवती मंडल ने गीत व वक्तव्यों द्वारा विचार व्यक्त किए।

बिहार से अर्ज लेकर पहुंचे श्रावक

बाईस तीर्थकंरों की निर्वाण भूमि बिहार पधारने के लिए आज बडी संख्या में अर्ज लेकर श्रावक केलवा पहुंचे। युवक परिषद् के अध्यक्ष उमेद पुगलिया और मंत्री पवन बोथरा के नेतृत्व में अन्य सदस्यों ने गुरुवर दे दो चौमासे गीत का संगान कर गुलाबबाग में चातुर्मास फरमाने की जोरदार पैरवी की। सभा के मंत्री नेमचंद वैद ने नालंदा विश्वविद्यालय के कारण शिक्षा भूमि के रुप में चर्चित रहे बिहार में पधारने की भावपूर्ण अर्ज प्रस्तुत की। नेपाल विहार के संयुक्त तेरापंथ समाज के महामंत्री चांद रतन संचेती, समणी परमप्रज्ञा, साध्वी आरोग्यश्री ने भी अपनी अर्ज प्रस्तुत करते हुए विचार रखें। आचार्यश्री ने समय पर अर्ज पर ध्यान देने का आश्वासन दिया।

महिला शक्ति का 36 वां वार्षिक अधिवेशन आज

अखिल भारतीय तेरापंथ महिला मंडल का 36वां वार्षिक अधिवेशन गुरुवार को आचार्यश्री महाश्रमण के सान्निध्य में शुरू होगा। इस अधिवेशन के त्रिदिवसीय कार्यक्रम में मंडल की देश में 375 शाखाओं से महिला शक्ति शरीक होगी। राष्टीय अध्यक्ष कनक बरमेचा के अनुसार संपूर्ण देश में तेरापंथ समाज की 60 हजार महिला कार्यकर्ता समाजोत्थान का कार्य कर रही है। मंडल की ओर से 3 लाख महिलाओं को कन्या भ्रूण हत्या न करने का संकल्प दिलाया जा चुका है। तुलसी शिक्षा परियोजना के अन्तर्गत ग्रामीण महिलाओं, कन्याओं में शिक्षा के प्रति जागरूकता फैलाई जा रही है। कनक बरमेचा ने बताया कि इस अधिवेशन में मंडल के कार्यक्रमों की समीक्षा एवं भावी योजनाओं पर चिंतन किया जाएगा। इसके बाद आचार्यश्री से आध्यात्मिक उर्जा प्राप्त कर अपने क्षेत्रों में नए जोश के साथ कार्य करने में कार्यकर्ता जुट जाएगी। अधिवेशन के दौरान आगामी दो वर्षों के लिए राष्टीय अध्यक्षा का चुनाव भी होगा।

नोटः इस समाचार में एक फोटो डीएससी–5685 के नाम से है

आवेश को शांत रखने की आवश्यकता

जीवन विज्ञान विद्यार्थी व्यक्तित्व विकास कार्यशाला

प्रेक्षा प्राध्यापक मुनि किशनलाल ने कहा कि विद्यार्थियों से कहा कि वे अपने जीवन में कभी आवेश का समावेश न होने दें। इससे स्वयं के साथ दूसरों का भी अहित हो सकता हैं। यह विचार उन्होंने जीवन विज्ञान विद्यार्थी व्यक्तित्व विकास कार्यशाला में मौजूद ढाई सौ विद्यार्थियों को संबोधित कर रहे थे। उन्होंने कहा कि व्यक्तित्व विकास के लिए विद्यार्थियों को प्रायः तीन बातों पर ध्यान देने की आवश्यकता है। स्मृति को

ताजा और गतिशील बनाए रखने के लिए स्वर्ण दृष्टि को विकसित किया जाए। मुनिश्री ने नमस्कार मंत्र और प्राणायाम का प्रयोग भी किया। तीन मिनट के इस प्रयोग से स्मृति का विकास किया जा सकता है। आवेश को शांत रखने के लिए अपने चित्त को श्वांस को दीर्घ करने की आवश्यकता है। उन्होंने तनाव को दूर करने के लिए विश्राम का प्रयोग और ताडासन के प्रयोग की जानकारी दी। तेरापंथ युवक परिषद् की ओर से आयोजित इस शिविर में प्रभारी मुनि दिनेशकुमार ने विद्यार्थियों को विनयपूर्वक जीवन जीने की प्रेरणा दी। इस अवसर पर तेयुप मंत्री लक्की कोठारी, संयुक्त मंत्री मुकेश कोठारी, किशोर मंडल संयोजक सुमित सांखला आदि उपस्थित थे।

भगवतीलाल रहे अव्वल

केलवाः 21 सितम्बर

तेरापंथ युवक परिषद् की ओर से आयोजित संगीत प्रतियोगिता में भगवतीलाल सोनी ने अपने गायन की प्रतिभा का परिचय देते हुए प्रथम स्थान प्राप्त किया। तेयुप मंत्री लक्की कोठारी ने बताया कि प्रतियोगिता का आगाज मुनि जंबूकुमार की ओर से प्रस्तुत मंगलगीत से हुआ। इसमें युवक परिषद, महिला मंडल, कन्या मंडल एवं किशोर मंडल के 45 प्रतियोगियों ने शिरकत की। कार्यक्रम की अध्यक्षता व्यवस्था समिति के अध्यक्ष महेन्द्र कोठारी ने की। मुख्य अतिथि संपतलाल मादरेचा थे। द्वितीय स्थान अर्जुन सोलंकी और तृतीय सुश्री वनिता वागरेचा रही।